B.A (Hons) Part III (1)

Philosophy Paper V

Topic — धर्मदर्शन का स्वरूप

Dr Sachidanand Prasad
Department of Philosophy
R.R.S. College, Mokama

धर्मदर्शन के संबंध मे कहा गया है कि धर्मदर्शन उस दार्शनिक क्रिया का नाम है जो धर्म का बौद्धिक विवेचन करता है। इस प्रकार हमलोग यह कह सकते है कि धर्म का दार्शनिक विवेचन धर्मदर्शन कहलाता है। धर्म दर्शन मे, धर्म से संबंधित विभिन्न तथ्यों के संकलन के द्वारा धर्मों का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार धार्मिक तथ्यों के विश्लेषण से सामान्य सिद्धांतों की खोज करना धर्मदर्शन का प्रमुख उद्देश्य है। विभिन्न दार्शनिकों ने अपने ढंग से इसकी परिभाषा दी है। प्रो० ब्राइटमैन ने धर्मदर्शन की परिभाषा देते हुए कहा है कि – धर्मदर्शन धर्म की बौद्धिक व्याख्या की खोज का एक प्रयास है। यह धर्म का संबंध अन्य अनुभूतियों से बतलाकर धार्मिक विश्वासों की सत्यता, धार्मिक मनोवृत्तियों एवं भावनाओं का मूल्य सामने करता है।

प्रो० ब्राइट ने धर्मदर्शन की परिभाषा देते हुए कहा है कि - धर्मदर्शन, धर्म की साधना तथा धर्म के व्यवहारों एवं विश्वासों की मूल विशेषताओं का सम्पूर्ण जगत की दृष्टि से विवेचन करता है तथा धर्म का सम्बन्ध तत्व से निश्चित करता है।
प्रो० निकोलसन ने धर्मदर्शन की परिभाषा देते हुए कहा है कि धर्मदर्शन का उद्देश्य धार्मिक विश्वासों का अन्य मौलिक विश्वासों के साथ, जो मानव जीवन को संचालित करते हैं, संयोजन स्थापित करना है।
प्रो० डी० एम० एडवर्ड ने धर्मदर्शन की परिभाषा देते हुए कहा है कि - धर्मदर्शन धार्मिक अनुभूति के स्वरूप, व्यापार, मूल्य तथा सत्यता की दार्शनिक खोज है। ईश्वर के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति विशेष की जो अनुभूति होती है, उसे धार्मिक अनुभूति कहा जाता है।
धर्मदर्शन, अर्घ विज्ञान (Axiology) की शाखा है। अर्घविज्ञान में मूल्यों का सामान्य अध्ययन होता है। धर्मदर्शन को अर्घविज्ञान की शाखा इसलिए कहा जाता है कि

धर्म का उद्देश्य आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति है। इस विचार का समर्थन ब्राइटमैन ने किया है। शाइर ने धर्म को धर्मदर्शन को तत्वविज्ञान की शाखा माना है। धर्म दर्शन का मुख्य विषय ईश्वर विचार है। ईश्वर एक तत्वशास्त्रीय प्रत्यय है। अतः धर्मदर्शन तत्वशास्त्र की देन है। धर्मदर्शन ईश्वर विचार पर केन्द्रित है धर्मदर्शन मे इन प्रश्नो पर विचार किया जाता है कि ईश्वर क्या है? ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण क्या है? ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है या व्यक्तित्वशून्य है? मनुष्य और ईश्वर मे क्या संबंध है? अशुभ का स्वरूप क्या है? अशुभ की समस्या का समाधान कैसे संभव है? अमरत्व के क्या प्रमाण है? धार्मिक चेतना के कौन- कौन तत्व है? क्या विभिन्न धर्मों के बीच एकता संभव है? धार्मिक ज्ञान का स्वरूप क्या है? इत्यादि। इसप्रकार हमलोग यह कह सकते है कि धर्मदर्शन का विषय काफी व्यापक है। सभी प्रकार के धर्म, उनके विश्वास तथा मान्यताएँ धर्मदर्शन में सम्मिलित है। इसप्रकार हमलोग यह देखते है कि सभी प्रकार की धार्मिक अनुभूतियाँ तथा आचरण धर्म दर्शन का विषय है।